नवयुवकों से

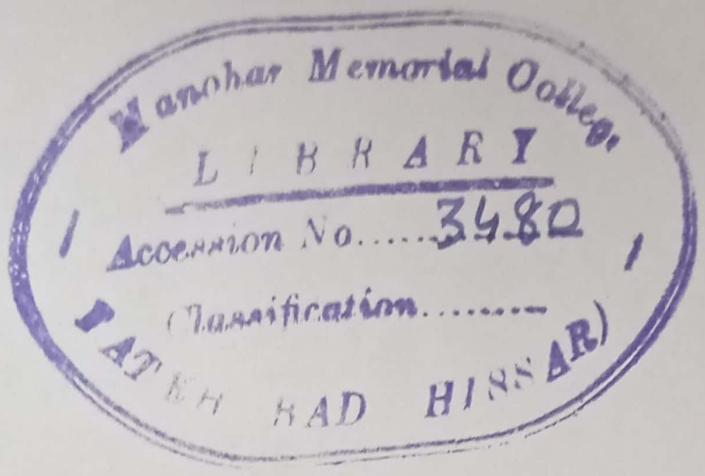

डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन्

सन्मार्ग प्रकाशन, दिल्ली-७

030
891.445

क्रम

१. चरित्र ही राष्ट्र को महान् बनाता है	७
२. नायमात्मा बलहीनेन लभ्यः	११
३. आत्मिक शक्ति को जगाओ	२०
४. शिक्षण-वृत्ति व्यापार नहीं मिशन है	२६
५. बुराई को भलाई से जीतो	२६
६. कृषकों को भी ज्ञान ज्योति दिखाइए	३५
७. साहित्य अकादमी का कर्त्तव्य	३६
८. धर्म का मानव-जीवन में स्थान	४६
९. मानव के प्रति प्राचीन एशियाई दृष्टिकोण	५०
१०. आध्यात्मिक चेतना जगाना आवश्यक	६२
११. कृषि हमारी अर्थ व्यवस्था का मूलाधार	६४
१२. भूदान से देश का नैतिक पुनरूद्भव	६६
१३. धर्म का जाति व्यवस्था से कोई संम्बन्ध नहीं	७३
१४. अनुशासनहीनता के लिए छात्र उत्तरदायी नहीं	७६
१५. सर्वे भवन्तु सुखिनः	८८
१६. शिक्षित ही नहीं सुसंस्कृत भी बनें	९१
१७. संसदीय लोकतंत्र	९४
१८. देश की एकता न टूटने पाए	१०६
१९. युग की चुनौति स्वीकार करो	११७
२०. नाटक और नाटककार	१२५
२१. विज्ञान की विनाशक शक्ति से मानव जाति कैसे बचे ?	१३२
२२. व्यक्ति की स्वतन्त्रता पवित्र है	१३८
२३. हमारा वर्तमान संकट और हमारा कर्त्तव्य	१४५

२४. शांति का आधार सदभावना है १५४
२५. विज्ञान और धर्म में विरोध नहीं है १६६
२६. चिन्तन मनन करो १७२
२७. संस्कृत साहित्य का अध्ययन क्यों १७५
२८. अतीत को मत भूलो भविष्य को देखो १८०
२९. सभी धर्मों का सम्मान १९३
३०. लोकतंत्र और शिक्षा २०१
३१. नारी को पूर्ण विकास की स्वतंत्रता हो २०३
३२. ईशावास्यमिदं सर्वम् २०५
३३. भूदान एक क्रातिकारी आन्दोलन २०७